## दिनांक 13 अक्तूबर, 1986

सं० ग्रो०वि०/यमुना/41-86/38208.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि सिवंब, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी ग्रभियन्ता, परिचालन मण्डल, सब ग्ररवन हरियाणा बिजली बोर्ड, जगाधरी, के श्रमिक श्री श्रिनिल कुमार शर्मा, पुत श्री राम लाल शर्मा, मकान नं० 595, करतारपुर कालोनी, यमुनानगर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्राह्मों कि दिवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं०-3(44) 84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिण्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री ग्रानिल कुमार शर्मा की छंटनी न्यायोचिंत तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/148-86/38215. — वूं कि हिर्याणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० आरती ग्रेफाईट प्रा.लि., तिगांव रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रमई पुत्र श्री दलीप राजभर, मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट, करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हिर्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जो-श्रम- 57/11245, दिनांक 7 अफरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीच लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्देश्य करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री रमई की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओं वि०/एफ विं०/148-86/38222. चूं कि हिर्याणा के राज्यपाल की राये है कि मैं आरती ग्रेफ ईट प्रा.लि., तिगांव रोड, फरोदाबाद के श्रमिक श्री फागु राम, पुत्र श्री राम किशीर, मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोती, पुरांना फरीदाबाद, तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिषिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई शक्यियों का प्रयोग करने हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठि सूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री पागू राम की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/एप.०डी०/148-86/38229.—चूंकि हरियाणों के राज्यपाल की राय है कि मै० ग्रारती ग्रेफाईट प्रा० लि०, तिगांव रोड, परीदाबाद, के श्रमिक श्री साधू राम, पुत्र श्री दुख राम, माप.त परीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भ्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं० 5415-3-847/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्चना सं० 11495-51-847/11245, दिनांक 7 फ.रवरी, 1958, द्वारा उक्त

यि नियम की धारों 7 के यधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद- प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री साधू राम की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

प० ग्रो॰वि॰/एफ॰डी॰/148-86/38236.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की रायं है कि कुँमै॰ आरती ग्रेफाईट प्रा॰ के लि॰, तिगांव रोड़, फरीदाबाद, के अमिक श्री बाबू लाल, पुत्र श्री मटल मार्फत फरीदीबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कालोनी, पुरांना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, घब, ग्रीदोगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग वन्ते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिनियम सं० 5415-3-अम्बम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए प्रधिस चना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गरित अम न्यायालय फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे अधिन या तो विवाद प्रस्त गामला न्यायालय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त गुमाम ला है, या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बाबू लाल की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰वि॰/एफ॰डी॰/148-86/38243.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ ग्रारती ग्रेफाईट प्रा॰ लि॰, तिगांव रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री बरसाती, पुत्र श्री झिंगुरी, मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों की प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी, ग्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री बरसाती की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ;

सं ग्रो वि /एफ बी | 148-86 | 38250. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ग्रारती ग्रेफाईट प्राठ लिं , तिगांव रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री पुरनमासी, पुत्र श्री गुरुदीन, मार्फत फरीदाबाद, कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, यब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम/68/15254 दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित जी विवादप्रस्त नान ना है या विवाद से पूर्मंगत श्रथवा सम्बन्धित मानला है :--

क्या श्री पुरनमासी की सेवायों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?